2

आदमी जिसने बड़े-बड़े काम किए

(2 राजाओं 2:19-25; 8:4)

एलीशा का काम अधिकतर एलिय्याह की नाटकीय सेवकाई से गुमनाम सा हो जाता है। नये नियम में एलिय्याह का उल्लेख तीस से अधिक बार आता है, जबकि एलीशा का उल्लेख केवल एक बार है (लूका 4:27)। शिक्षक तथा प्रचारक आम तौर पर एलिय्याह की बात करते हैं, जबकि उनके कहने का अर्थ एलीशा होता है (मैं स्वयं भी ऐसा ही करता हूं)। अधिकतर लोग एलीशा की सेवकाई के दायरे, उसके आश्चर्यकर्मों की पहुंच या अपनी पीढ़ी पर उसके जीवन के प्रभाव से अवगत नहीं हैं। उसकी सेवकाई एलिय्याह की सेवकाई से कहीं अधिक है। (एलीशा के शागिर्द के रूप में उसके दस साल मिला लें तो उसकी सेवकाई पचास साल की बनती है।) इसके अलावा एलीशा के नाम बताए गए आश्चर्यकर्मों में दोगुने से भी अधिक का श्रेय एलिय्याह को दिया जाता है।

एक अवसर पर, एलीशा का सेवक गेहजी इस्राएल के राजा के सामने खड़ा था। शायद उसे वहां नबी की ओर से संदेश देकर भेजा गया था। गेहजी जब वहां था तो राजा ने उससे कहा, कि वह एलीशा द्वारा किए गए बड़े-बड़े काम उसे बताए (2 राजाओं 8:4)। यदि एलीशा वहां होता तो वह राजा के शब्दों को बदलकर यह कहता कि *परमेश्वर ने* बड़े-बड़े काम किए हैं। तौभी परमेश्वर ने एलीशा से कई बड़े-बड़े काम करवाए।

एलीशा के कई बड़े-बड़े कामों को सहायक आश्चर्यकर्म कहा जा सकता है। इन आश्चर्यकर्मों के सम्बन्ध में लगता है कि संदेश यह है कि परमेश्वर परवाह करने वाला परमेश्वर है। आम तौर पर एलीशा के काम का धुंधला पहलू होता था। उसका व्यक्तित्व एलिय्याह के व्यक्तित्व से अलग था, परन्तु हमें उसे ऐसे नबी के रूप में नहीं सोचना चाहिए जो सारा ही मीठा और प्रकाश था। जब लोगों ने सर्वशक्तिमान के विरुद्ध बगावत की तो एलीशा ने दण्ड देने के लिए परमेश्वर के व्यक्ति के रूप में काम किया। इसलिए हमें समझना चाहिए कि एलीशा का संदेश दोहरा था:

- परमेश्वर, उसके दूत, और उसके संदेश का सम्मान करो तो तुम्हें आशीष मिलेगी।
- परमेश्वर, उसके दूत, और उसके संदेश का सम्मान न कर पाओ तो तुम श्रापित होगे।

इस पाठ में हम एलीशा का आरम्भिक आश्चर्यकर्मों का अध्ययन करेंगे। स्पष्टतया यह ऊपर दिए गए दो संदेश समझाने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा चुने गए थे।

आदर से भरे पर आशीषः एक सोता ठीक किया गया (2:19-22)

पिछला पाठ नबियों के पचास पुत्रों को एलीशा की डांट के साथ समाप्त हुआ था, जिन्होंने

व्यर्थ में एलिय्याह की तलाश की थी। उस घटना के बाद स्पष्टतया एलीशा ने यरीहो नगर में यह देखने के लिए प्रतीक्षा की कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहता है। अधिक देर नहीं हुई थी कि उसे पहला अवसर मिल गया जिसमें नगर के लोग उसके पास विनती लेकर आए (आयत 19क)। एलीशा पहले से इस बात के लिए जाना जाता था कि परेशानी के समय उससे कोई भी मिल सकता है। परमेश्वर को आज भी ऐसे ही व्यक्ति की आवश्यकता है।

श्राप

लोगों ने इस प्रकार आरम्भ किया, ''देख यह नगर मनभावने स्थान पर बसा है जैसा मेरा प्रभु देखता है'' (आयत 19ख)। यरीहो यरदन घाटी के दक्षिणी भाग में, मृत (खारा) सागर के आरम्भ में लगभग दस मील उत्तर पश्चिम में था। (एलीशा के समय में इस्राएल देश वाला मानचित्र देखें।) नगर पलस्तीन के ताज़ा पानी के सबसे बड़े चश्मों में से एक के इर्द-गिर्द फैला था (अब इसे आइन इस सुल्तान कहा जाता है) यानी यह ऊबड़-खाबड़ भूमि पर एक नखलिस्तान था। खजूर के पेड़ों के बागों से ढका [व्यवस्थाविवरण 34:3] और गूलर के पेड़ों से ढका [लूका 19:4] सुगंधित झाड़ियों की गंध भरी हवा, ... दूर मोआब के पहाड़ों से, यरीहो [वास्तव में] ... मनभावना स्थान था।[1]

परन्तु यरीहो के लोगों की एक समस्या थी कि वहां का पानी बुरा था और भूमि गर्भ गिराने वाली थी (आयत 19ग)। आयत 19 में बुरा के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ है अशुभ।[2] JB में खराब है। खराब पानी चश्मे का था (आयत 21) सम्भवतया उसी चश्मे का ताज़ा पानी जिसकी हमने अभी-अभी बात की है।

आयत 19 में इब्रानी शब्द के अनुसार गर्भ गिराने वाला और आयत 21 में मृत्यु का गर्भ गिराने वाला ही है। कई लोगों का विचार है कि इसका अर्थ भूमि का उपजाऊ न होना है; परन्तु, डोनल्ड वाइज़मैन के अनुसार, इब्रानी का इस्तेमाल आम तौर पर व्यक्तियों या प्राणियों के लिए किया जाता है।[3] CJB के अनुवाद का अर्थ है वह भूमि जो गर्भ गिरने का कारण बनती है। क्योंकि जो बात भूमि को प्रभावित करेगी वही उस भूमि के रहने वालों को भी प्रभावित करेगी इसलिए दूषित पानी के दोनों पर हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं।

पानी की समस्या सम्भवतया दो प्राचीन श्रापों के कारण थी। पहला तो मूसा द्वारा बताया गया एक सामान्य श्राप मूसा ने इस्राएलियों को बताया था कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूं। चौकसी नहीं करेगा, तो यह सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे (व्यवस्थाविवरण 28:15)। उनमें से एक श्राप यह है: शापित हो तेरी सन्तान और भूमि की उपज और गायों और भेड़-बकरियों के बच्चे (आयत 18)।

दूसरा, यरीहो का विनाश करने के बाद यहोशू ने उसे एक विशेष श्राप दिया: ''जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से शापित हो'' (यहोशू 6:26क)। उस श्राप के बावजूद राजा अहाब के शासनकाल में यरीहो को फिर से बनाया गया था (1 राजाओं 16:34)। लोगों ने परमेश्वर के वचन का अपमान किया था जिसके परिणामस्वरूप यरीहो के लोगों को कष्ट उठाना पड़ा। एफ़. डब्ल्यू. क्रमांचल ने इस परिस्थिति को इस प्रकार दिखाया है:

> जो भूमि वनस्पति के लिए उपजाऊ थी, उपजाऊपन में पवित्र भूमि के सबसे अधिक उपजाऊ भागों की प्रतिस्पर्धी हो गई थी। ... [परन्तु अब] खजूर के पेड़ उदास होकर झुक गए थे; बागों में अब सुगंध न रही थी; पशु उन चरागाहों से खाकर जो किसी समय लहलहाते थे दुर्बल हो गए थे; भेड़ों ने अपने बच्चे झुण्ड में फैंक दिए; और लोग भी बीमारी और समयपूर्व मृत्यु से पीड़ित थे।[4]

इस कारण नगर के लोग एलीशा से सहायता मांगने आए।

उपचार

एलीशा ने उनसे कहा, ''एक नये प्याले में नमक डालकर मेरे पास ले आओ'' (2 राजाओं 2:20क)। नया प्याला क्यों? शायद इसलिए क्योंकि यह आम इस्तेमाल से दूषित नहीं हुआ था।[5] नमक क्यों? शायद इसलिए क्योंकि नमक का सम्बन्ध इस्राएलियों के साथ परमेश्वर की उस वाचा से था (देखें लैव्यव्यवस्था 2:13)। यह कहने के बाद कि हमें अभी भी पूछना चाहिए कि पानी शुद्ध करने का नये प्याले और नमक के साथ क्या सम्बन्ध था? क्या पुराने प्याले में से नमक का उतना ही प्रभाव नहीं होना था जितना नये प्याले से नमक का? यरीहो के लोग खारे समुद्र से दस मील दूर रहते थे। उन्हें मालूम था कि खारा पानी पौधे उगने नहीं देता बल्कि वनस्पति को जलाता ही है। इसके अलावा यदि नमक में शुद्ध करने वाला कोई गुण होता भी तौभी इसे सोते पर डालने पर केवल वही पानी प्रभावित होता जो इसे छूता न कि सोते से निरन्तर बहने वाला पानी। यानी उपचार स्थायी नहीं होना था।

मेरा सुझाव है कि परमेश्वर ने एलीशा से नया प्याला और नमक का इस्तेमाल उसी कारण से करवाया, जिस कारण से उसने मूसा से जंगल में कड़वे पानी को मीठा करने के लिए पेड़ की टहनी का इस्तेमाल करवाया था (निर्गमन 15:22-25)। क्योंकि नये प्याले, नमक और नई टहनियों का पानी के अच्छा या बुरा होने से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए यह सब को स्पष्ट होगा कि मनुष्य कि सामर्थ मनुष्य के ढंग में नहीं बल्कि परमेश्वर में थी (देखें 2 राजाओं 2:21ख)।

तो फिर परमेश्वर ने एलीशा से *किसी चीज़* का इस्तेमाल क्यों करवाया? शायद यह साबित करने के लिए कि यहोवा केवल उन्हीं लोगों को आशीष देता है, जो उस पर भरोसा रखकर उसकी बात मानते हैं। एलीशा ने प्याला और नमक स्वयं नहीं लिया बल्कि नगर के लोगों को लाने के लिए कहा। यदि वह न लाते तो क्या होता? हमारे लिए इसका कोई अर्थ नहीं होता? यदि वे एलीशा की विनती के अनुसार लाने से इनकार कर देते तो? पानी वैसे ही अशुद्ध रहता और उनकी परेशानियां वैसे की वैसे रहतीं।

उन्हें इस बात का श्रेय मिलना चाहिए कि उन्होंने उसकी बात मानने से इनकार नहीं किया। वे एलीशा के पास प्याला और नमक ले आए (आयत 20ख)। फिर उसने पानी के सोते के पास जाकर नमक उसमें डाल दिया और कहा, ''यहोवा यूं कहता है, मैं 'यह पानी ठीक कर देता हूं जिससे वह फिर कभी [जवान] मृत्यु या गर्भ गिरने का कारण न होगा''' (आयत 21)। CJB में है ''यह कभी मृत्यु या गर्भपात का कारण नहीं होगा।''

2 राजाओं के लेखक[6] ने फिर यह टिप्पणी जोड़ी: ''एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक [जिस दिन तक लेखक जीवित था] ऐसा ही है'' (आयत 22)।

कई अधिकारियों का मानना है कि हमारे समय तक भी वह पानी शुद्ध और निर्मल बहता *रहता* है। यदि आप प्राचीन यरीहो वाली जगह जाएं तो आपको एलीशा का चश्मा (अैन एस सुल्तान) दिखाया जाएगा और उसमें से पीने के लिए कहा जाएगा। टी. ई. मैकोमिस्की के अनुसार वह सोता आज भी यरीहो के आसपास के लोगों के लिए अच्छे पानी का महत्वपूर्ण स्रोत है।[7]

परमेश्वर ने फिर से दिखा दिया कि वह, वह परमेश्वर है, जो सहायता करता और चंगा करता है (देखें भजन संहिता 103:3; 147:3; यशायाह 30:26)। यदि भूमि श्राप के अधीन थी (जैसा कि लगता है कि यह थी), तो उसने एलीशा के द्वारा उस श्राप को हटा लिया था। जिन्होंने उसके नबी के लिए, और इस प्रकार उसके लिए, सम्मान दिखाया था, उन्हें आशीष मिली थी। क्रमांचर ने उस प्रसन्नता का शब्द चित्रण किया है, जो उन्हें मिली होगी:

> खेतों में उनका प्राचीन उपजाऊपन लौट आया और मनुष्यों और जन्तु [नये मिले] जीवन और शक्ति से आनन्द कर सकते थे। पिछले उजाड़ के सभी निशान मिट गए थे; यरीहो के लोग आनन्द से भर गए थे और जवानों और बूढ़ों सब लोगों के चेहरे खिल उठे और हर जगह चहल पहल थी। दाख की पहाड़ियों के बीच फिर से काटने वालों के गीत सुनाई देने लगे थे, जबकि चरवाहा अपने आस-पास [उछलते] अपने मेमनों के साथ था, अपनी बांसुरी से मधुर आवाज निकाल रहा था। स्थानीय किसान आने वाली उपज की बड़ी प्रतिज्ञा के मारे आनन्द से भरपूर था और पर्यटक यरीहो के पानी को देख ... प्रशंसा कर सकता था।[8]

अपमान करने वाले पर श्राप: मज़ाक करने वालों पर आक्रमण हुआ (2:23, 24)

अब हम एलीशा के जीवन की सबसे विवादास्पद घटना पर आते हैं: जब भालुओं ने उन जवानों पर आक्रमण कर दिया, जिन्होंने इस नबी का मज़ाक उड़ाया था। कहानी एलीशा की सहायता करने वाली सेवकाई से एलिय्याह की गरम सेवकाई से अधिक मिलती प्रतीत होती है। KJV ठट्ठा करने वालों को छोटे बच्चे कहकर विवाद को बढ़ावा दिया है (2 राजाओं 2:23)। निर्धन, बेचारे, प्यारे, भोले बच्चों के लिए सहानुभूति करने की बात सुनना नई बात नहीं है।

हम इस पर चर्चा करेंगे कि वास्तव में वे बच्चे भोले थे या नहीं, परन्तु अभी हम केवल इस पर विचार करना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा ने एलीशा के जीवन के विवरण में यह कहानी क्यों डाल दी। शायद यह कहानी यह बात साबित करने के लिए शामिल की गई है कि एलीशा वास्तव में परमेश्वर का पवित्र प्रतिनिधि था। वह बात को मानने वाला सहायता करने वाला था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि वह कमज़ोर था। परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में उसका सम्मान होना चाहिए था, जिन्होंने उसके साथ बदतमीजी की उन्हें उसका फल मिल गया।

अपमान भरा मज़ाक

कहानी आरम्भ होती है, ''वहां [यरीहो] से वह [एलीशा] बेतेल को चला'' (आयत 23क)। वचन में ''को चला'' है क्योंकि चढ़ाई सीधी और यरदन घाटी से उस ऊंचाई पर जाने

के लिए जिस पर बेतेल बसा था सीधी और लम्बी थी। कुछ दिन पहले एलीशा और एलिय्याह नबियों की पाठशाला में वहां आए थे, और छात्रों को इस बात का पता था कि एलिय्याह को उठा लिया जाना था (देखें 2:2, 3)। शायद एलीशा बेतेल में नबियों के पुत्रों को बताने आया था कि वहां क्या हुआ।

बेतेल इस्राएल के इतिहास में एक पवित्र माना जाने वाला स्थान था। वहां पर याकूब ने स्वर्ग को जाती सीढ़ी वाला दर्शन देखा था। फिर उसने उस स्थान का नाम बेतेल रख दिया था। बेतेल घर (अंग्रेज़ी में beth) के लिए इब्रानी परमेश्वर के लिए अधिक प्रचलित नामों में से एक (*el*) के साथ इब्रानी शब्द को मिलाता है। इस कारण इसका अर्थ ''परमेश्वर का घर'' है (उत्पत्ति 28:10-19)। दुख की बात है कि परमेश्वर का घर होने के बजाय यह मूर्तिपूजा का ईश्वर रहित वास बन गया था। राजा यारोबाम ने बेतेल में सोने का बछड़ा रख दिया था और नगर को इस्राएल के उत्तरी राज्य में मूर्ति पूजा का केन्द्र बना दिया था (1 राजाओं 12:26-33; देखें आमोस 3:14; 4:4, 5)।

एलीशा के बेतेल के निकट पहुंचने पर, ''नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका ठट्ठा करके कहने लगे, हे चन्दुए चढ़ जा, हे चन्दुए चढ़ जा'' (2 राजाओं 2:23ख)। ध्यान दें कि NASB में ''छोटे लड़कों'' की जगह ''young lads'' है। अनुवादित शब्द ''lads'' का इस्तेमाल आम तौर पर पुराने नियम में युवा लोगों के लिए किया गया है। शब्द का एक वचन रूप यूसुफ के लिए इस्तेमाल किया गया था, जब वह तीस वर्ष से ऊपर का था (देखें उत्पत्ति 41:12)। इस शब्द का इस्तेमाल बोअज़ के कटाई करने वालों (रूत 2:15) अब शालोम (2 शमूएल 18:5), यिर्मयाह (यिर्मयाह 1:6, 7) और अहाब के सिपाहियों (1 राजाओं 20:14) के लिए किया गया था। अधिकतर टीकाकार अनुमान लगाते हैं कि 2 राजाओं 2 वाले ''छोटे लड़के'' बारह से बीस की उम्र के थे। उन्हें छोटे बच्चे मत समझें। इसके विपरीत उन्हें यहोवा के एक नबी को आतंकित करने पर तुले बिगड़े हुए जवानों के रूप में देखें। ऐसे लोगों के लिए हमारे यहां गुंडा, बदमाश, जवान ठग, बाल अपराधी आदि शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। शायद आप जहां रहते हैं वहां भी ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया जाता हो। उनमें कोई बचकाना हरकत नहीं थी बल्कि ये लोग ज़िम्मेदार लोग थे।

मन में यह तस्वीर बनाएं। स्पष्टतया समाचार बेतेल में पहुंच चुका था कि एलीशा उस नगर में आ रहा है। बदमाशों, ठगों में यह बात फैल गई जिन्हें टांग अड़ाने के अलावा और कोई काम नहीं होता था। एक नबी नगर के निकट पहुंच गया, इन गुंडों की भीड़ फाटक में से उस पर टूट पड़ी कहानी में आगे उनकी गिनती ''बयालीस'' बताई गई है (2 राजाओं 2:24)। सम्भवतया यह ठट्ठा करने वालों का छोटा सा भाग होगा। (मैं यह मान लेता हूं कि उन जवानों में से कई भालुओं से पीछा छुड़ाकर भाग सकते थे और भाग गए।) यह भीड़ सैकड़ों में हो सकती है। जब मैं छोटा था तो कई बार लोग मेरा मज़ाक उड़ाते थे। शायद आपके साथ भी ऐसा ही होता हो। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आपके पीछे-पीछे चलती *सैकड़ों* की भीड़ के आपका ठट्ठा उड़ाने पर कैसा लग सकता है? यह भयभीत करने वाला होगा!

हट्टे-कट्टे गुंडे एलीशा पर चिल्ला रहे थे, ''हे चंदुए, चढ़ जा; हे चंदुए, चढ़ जा!'' कइयों को लगता है कि ''चढ़ जा'' का अर्थ एलिय्याह के ऊपर उठाए जाने के लिए है, वह समाचार

तो फैल चुका था और ऐसा हुआ और यह जवान अपनी नाराज़गी जता रहे थे, ''तू दावा करता है कि तेरा स्वामी आकाश पर चढ़ गया। तो फिर तू भी क्यों नहीं चढ़ जाता?'' (देखें NCV.) परन्तु यरीहो से बेतेल में एलीशा के जाने के लिए आयत 23 के पहले भाग में ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल किया गया इसलिए वे केवल इतना कह रहे होंगे, ''यहां मत रुक। चलता चल!'' जो भी हो, वे एलीशा से कह रहे थे कि बेतेल में उसका स्वागत नहीं है।

उन्होंने एलीशा को ''हे चंदुए'' कहा। CJB में ''गंजे सिर वाले, चढ़ जा! गंजे सिर वाले चढ़ जा!'' है। मैं अपने गंजेपन पर मज़ाक करता हूं (मैं चाहता था कि मेरे बाल सफ़ेद हो जाते; परन्तु ये तो उड़ ही गए), परन्तु जब लोग मेरे सिर की ''चमक'' (चमक से तो मेरी आंखें चुंधिया गई थी) पर टिप्पणी करते हैं तो मुझे थोड़ी हिचक होती है, परन्तु जो बात हमारे समय में हंसी मज़ाक है वही एलीशा के समय में गंभीर अपमान था। विद्वानों के अनुसार यहूदियों में गंजापन बहुत कम होता था और कुछ लोग इसे शर्मनाक मानते थे (देखें यशायाह 3:17, 24)।

बेशक उन जवानों द्वारा कहे गए शब्दों का इतना महत्व नहीं है। आपने बच्चों, नवयुवकों या वयस्कों को किसी लाचार को तंग करते उसके गिर्द इकट्ठे हुए देखा होगा। यदि देखा है तो आपको मालूम है कि शब्दों से उतना दुख नहीं होता जितना चेहरों पर दिखाई देती घृणा और मन के मैल में दिखाई देता और आवाज़ों में सुनाई देता है।

नबियों ने बेतेल में होने वाली मूर्तिपूजा की निंदा की थी (देखें 1 राजाओं 13:1, 4); अब उस नगर के जवान गुंडे एलीशा पर अपना गुस्सा उतार रहे थे। मैथ्यू हैनरी ने सुझाव दिया है कि ''इन बच्चों ने वही कहा जो इन्हें सिखाया गया था; उन्होंने अपने काफ़िर माता-पिता से गंदे नाम और गंदी भाषा देना ही सीखा था, विशेषकर नबियों को। इन जवान [मुर्गों] ... ने पुराने मुर्गों की ही आवाज़ निकाली।''[9] कई माता-पिता अपने बच्चों को ''बातों, कामों और व्यवहार'' से आज भी दूसरों से विशेषकर अलग जाति, रंग या सामाजिक स्थिति वाले लोगों से घृणा करना ही सिखा रहे हैं। धन्य है वह बालक जिसके माता-पिता उसे यह सिखाते हैं कि सब लोगों को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है (उत्पत्ति 1:26, 27; 9:6; देखें 1 पतरस 2:17; NIV)।

वास्तविक समस्या यह थी कि इन जवानों ने किसी का आदर करना नहीं सीखा था। उनके मन में किसी बुज़ुर्ग के लिए कोई आदर नहीं था। उनके मन में उस बात के लिए जिसे असमर्थता माना जाता है, कोई सहानुभूति नहीं थी। उनके मन में परमेश्वर के नबी के लिए कोई आदर नहीं था। उनके मन में यह अपमान स्वयं परमेश्वर के लिए आदर की कमी के कारण था।

दुख की बात है कि अपमान का पाप आज भी हमारे बीच में है। कई बच्चे अपने माता-पिता का आदर नहीं करते (देखें इफिसियों 6:1-3), और कई माता-पिता अपने बच्चों का आदर नहीं करते (देखें इफिसियों 6:4)। कई पत्नियां अपने पतियों का आदर नहीं करती (देखें 1 पतरस 3:1-6), जबकि कई पति अपनी पत्नियों का आदर नहीं करते (देखें 1 पतरस 3:7; NIV)। कई कर्मचारी अपने नियोक्ताओं का आदर नहीं करते (देखें 1 पतरस 2:18; इफिसियों 6:5-8) और कई नियोक्ता अपने कर्मचारियों का आदर नहीं करते (देखें इफिसियों 6:9)। कई लोग दूसरों की सम्पत्ति का आदर नहीं करते, जैसा कि चोरी तथा सीनाज़ोरी (दीवारों पर लिखने सहित) से पता चलता है (देखें रोमियों 13:9)। कई लोग दूसरों के अच्छे नामों का आदर नहीं करते, जिस कारण वे उनके बारे में अफ़वाह फैलाकर उनकी बदनामी करते हैं (देखें 1 पतरस 2:1)। इतना

फैल चुके इस अपमान का सिरा कहां है ? एलीशा के समय की तरह आज भी यह परमेश्वर और उसके वचन का अपमान करने के कारण ही होता है। परमेश्वर आज भी वही प्रश्न पूछ रहा है, जो उसने बहुत पहले पूछा था: मेरा आदर कहां है ? (मलाकी 1:6)।

उचित परिणाम

भीड़ का काम स्पष्टतया आगे बढ़ जाता है यानी अपमान करते-करते भीड़ आम तौर पर पत्थर, डंडे, कीचड़ और जो हाथ में आए वह फैंकने लगती है। यह भीड़ केवल शब्दों को ही नहीं फैंक रही थी। हमारा वचन पाठ कहता है कि एलीशा ने ''पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की'' (2 राजाओं 2:24क)। यह हमें बताता है कि वे बातों से तंग करते हुए उसके साथ साथ उसके पीछे चल रहे थे। शब्दों का अर्थ यह भी हो सकता है कि नबी ने पहले उन्हें अनदेखा करने की कोशिश की। जब वे गालियां देने से बाज नहीं आए, तो उसने रुककर, उनकी ओर देखा और ''यहोवा के नाम से उनको शाप दिया'' (आयत 24ख)।

''यहोवा के नाम में उनको शाप दिया'' का अर्थ है कि नबी ने उनसे निपटने के लिए परमेश्वर को पुकारा। यह वह शाप है जिसके लिए एलीशा की अलोचना की जाती है। कम से कम तीन टिप्पणियां करना उचित है। पहली, याद रखें कि एलीशा पुराने नियम के समय में रहता था। नये नियम में हमें आज्ञा दी गई है, ''अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो'' (रोमियों 12:14)। परन्तु एलीशा नये नियम की व्यवस्था के अधीन नहीं रहता था।

दूसरा, मूसा की व्यवस्था की शिक्षा थी कि नबी परमेश्वर के (जो उसके नाम से बोलते थे) प्रतिनिधि थे। उनका और उनके संदेश का अपमान स्वयं परमेश्वर का अपमान माना जाता था (देखें व्यवस्थाविवरण 18:19)। इसके अलावा व्यवस्था में कहा गया था कि जो लोग परमेश्वर के बारे में अपमानजनक ढंग से बात करें वे मार डाले जाएं (देखें लैव्यव्यवस्था 24:16)। 2 इतिहास 36:16 में लेखक ने बताया कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को दासता में क्यों जाने दिया था: ''परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके नबियों की हंसी करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुंझला उठा, कि बचने का कोई उपाय न रहा।'' इस प्रकार व्यवस्था के अनुसार एलीशा का ठट्ठा उड़ाने वाले लोग परमेश्वर की निंदा कर रहे थे और वे परमेश्वर के क्रोध के अधिकारी थे।

तीसरा, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि एलीशा ने यहोवा को बताया कि उसे क्या करना चाहिए। उसने बात परमेश्वर के हाथ में दे दी।

परमेश्वर ने क्या *किया?* क्या उसने उन लड़कों की हानि रहित गलती को अनदेखा किया ? क्या उसने मुस्कुराते हुए कहा, ''चलो कोई बात नहीं लड़के तो लड़के हैं, नहीं, नहीं, नहीं।'' परमेश्वर ने चेतावनी दी थी, ''यदि तू मेरे विरुद्ध चलते ही रहो ... मैं तुम्हारे बीच वनपशु भेजूंगा, जो तुम को निरवंश करेंगे'' (लैव्यव्यवस्था 26:21, 22क)। बेतेल के मूर्तिपूजक और विद्रोही माताओं और पिताओं को समझ आ जाना था कि इन शब्दों का अर्थ क्या है।

नगर के पास ही एक जंगल था, जिसमें जंगली जीवों का झुंड था। ''तब जंगल में से दो रीछिनियों ने निकलकर उन में से बयालीस लड़के फाड़ डाले'' (2 राजाओं 2:24ग)। उन शब्दों को हम अपने मनों में स्पष्ट और आतंकित करने वाले दृश्यों में उनके जाने के बिना नहीं पढ़

सकते। पागल रीछिनियां ... आतंक की चीखें ... कटे हुए हाथ ... फाड़ डालने वाले दांत ... कष्ट की पुकारें ... छपछपाता लहू ... नगर के फाटक की ओर भागते घायल ... भूमि पर पड़ी क्षत-विक्षत लाशें।

हम उन बयालीस लोगों को होने वाले घावों की सीमा नहीं बता सकते। शायद उनमें से कुछ मर गए; शायद कुछ को जीवनभर के लिए दाग मिले, जो उन्हें मरने तक याद दिलाते रहे हों कि उन्होंने एलीशा का ठट्ठा उड़ाया था। यह बेतेल में एक भयंकर, खतरनाक दिन था, ऐसा दिन जो निश्चय ही उस नगर के रहने वालों के मनों पर सदा के लिए अंकित हो गया होगा।

इस बात पर संदेह न करें कि यह परमेश्वर की ओर से न्याय था। आम तौर पर भालू केवल तभी हमला करता है जब वह भयभीत हो या फिर उसे भूख लगी हो। दो रीछिनियों को भीड़ के बीच में आकर हमला करने, दायें और बायें काट डालने का कोई स्वाभाविक कारण नहीं था जब तक उन्होंने बयालीस जवानों को मार न दिया। बेतेल ने उस कड़वी सच्चाई को सीख लिया था जो बाद में पौलुस ने बताई: ''धोखा न खाओ; *परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता*; क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटा जाएगा'' (गलातियों 6:7; देखें व्यवस्थाविवरण 7:10)। क्या आप किसी की आलोचना वह पाने के लिए करेंगे जो रीछिनियों ने किया? फिर एलीशा की नहीं बल्कि परमेश्वर की आलोचना कर रहे हैं। परन्तु सावधान रहें कि ''नाशवान मनुष्य को सबसे बुद्धिमान परमेश्वर का न्याय करने के लिए निंदापूर्ण न्याय करने से बचना चाहिए!''[10]

परमेश्वर ने यह स्थापित करने के लिए कि कोई नई शुरुआत हो रही है किसी नये युग के आरम्भ के निकट आम तौर पर नाटकीय, बल्कि त्रासदी भरी घटनाओं का इस्तेमाल किया है जिसका अर्थ यह नहीं है कि पिछले सब नियम बदल गए हैं।[11] जंगल में इस्राएलियों के परमेश्वर के साथ नया सम्बन्ध आरम्भ होने पर, नादाब और अबीहू इसलिए मर गए क्योंकि उन्होंने वेदी पर बाहरी आग भेंट की थी (लैव्यव्यवस्था 10)। यहोशू द्वारा इस्राएल का नेतृत्व सम्भालने पर, आकान की मृत्यु हो गई थी क्योंकि उसने वह ले लिया था जो यहोवा को अर्पित किया गया था (यहोशू 7)। जब राजा दाऊद ने अपनी राजधानी यरूशलेम को बनाया, तो ऊजा की मृत्यु हो गई क्योंकि उसने संदूक को हाथ लगाया था (2 शमूएल 6:1-7)। मसीही युग आरम्भ होने के समय भी हन्नयाह और सफीरा पर परमेश्वर का क्रोध गिरा था क्योंकि उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला था (प्रेरितों 5)। इन सभी त्रासदियों में संदेश यही था कि ''जब परमेश्वर कोई बात कहता है, तो उसके कहने का अर्थ वही होता है! आपको परमेश्वर और उसकी इच्छा का आदर करना आवश्यक है! यदि आप आदर नहीं करते हैं तो त्रास्दी का आना पक्का है!''

क्या बेतेल के वासियों ने यह सबक सीख लिया? हम पक्का नहीं कह सकते, परन्तु कम से कम, जहां तक हमें मालूम है उन्होंने बाद में एलीशा या परमेश्वर के किसी अन्य नबी का ठट्ठा नहीं उड़ाया। वास्तव में इस त्रासदी का समाचार पूरे देश में फैल गया होगा, क्योंकि फिर हम *कभी* भी *किसी से* भी एलीशा का ठट्ठा उड़ाने की बात दोबारा नहीं पढ़ते। संदेश स्पष्ट था: ''एलीशा की सेवकाई उनके लिए जीवन होनी थी जो [यहोवा] का आदर करते परन्तु उनके लिए जो उसे तुच्छ जानते, मृत्यु होनी थी।''[12] ''परमेश्वर की कृपा *और* कड़ाई को देख'' (रोमियों 11:22क)।

सारांश (2:25)

बेतेल में अपना काम पूरा करने के बाद (या जो भी था, एलीशा ''कर्म्मेल को गया'') (आयत 25क), यह जो उसके मार्ग दर्शक की सबसे बड़ी विजय वाली जगह थी (1 राजाओं 18)। एलीशा के लिए कर्म्मेल पहाड़ एकांत स्थान बन गया (देखें 2 राजाओं 4:25), शायद आत्मिक सामर्थ नये सिरे से जाने की जगह। ''वहां से वह [तीस या अधिक मील] शोमरोम को लौट गया'' (2:25ख), जहां उसका एक घर था (देखें 6:24, 32)। शोमरोम नगर इस्राएल के उत्तरी राज्य की राजधानी था, जो अहाब के पुत्र, राजा याहोराम का गृहनगर था। एलीशा को पता चलता रहा कि देश में क्या हो रहा है, परन्तु उसके बारे में हम अगले पाठ में और कहेंगे।

हमें इस पाठ से क्या सबक लेना चाहिए? यह नहीं कि हम अपने आंगन में दो रीछिनियों को बांध दें ताकि जो कोई सुसमाचार का मज़ाक उड़ाएं हम उस पर उन्हें छोड़ दें। बल्कि हमें सबक लेना चाहिए कि इसमें बताई मूल सच्चाइयां आज भी सही हैं:

- परमेश्वर का और उसकी चीज़ों का आदर करो तो जीओगे।
- परमेश्वर का और उसकी चीज़ों का अपमान करो तो मरोगे।

यदि हम परमेश्वर और उसके वचन का आदर नहीं करते तो आवश्यक नहीं है कि हम जंगली जन्तुओं द्वारा मार डाले जाएं; परन्तु उसकी आज्ञा न मानने पर हम आत्मिक रूप में *अवश्य* मर जाएंगे (इफिसियों 2:1), और यदि हम मन नहीं फिराते तो अनन्तकाल के लिए मर जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:14, 15)। बहुत पहले मूसा ने लोगों को बताया था, ''मैंने तुझ को जीवन और मरन ... दिखाया है'' (व्यवस्थाविवरण 30:15)। हमारे सामने भी आज यही पसन्द है। हम इसमें से किसे चुनेंगे?

टिप्पणियां

[1]जी. रालिंसन, ''2 राजाओं,'' *द पुलपिट कमैन्ट्री, अंक 5, 1 एण्ड 2 किंग,* सम्पा. एच. डी. एम. स्पैंस एण्ड जोसेस एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 23. [2]डोनल्ड जे. वाइज़मैन, *1 एंड 2 किंग्ज़: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1993), 197. [3]वही। [4]एफ. डब्ल्यू. क्रमचर, *एलीशा, ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 11. [5]क्लाइड एम. मिल्लर, *फ़र्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991), 314. [6]हम नहीं जानते कि 2 राजाओं की पुस्तक किसने लिखी। बाइबल से बाहर की यहूदी परम्परा के अनुसार, यिर्मयाह ने इस पुस्तक को लिखा। [7]टी. ई. मैक्कोमिसकी, एलीशा, एलिसियूस, *दि जौंडरवन पिक्टोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल,* संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1975, 76), 2:291. [8]क्रूमचर, 14. [9]मैथ्यू हैनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल,* संपा. लेसली एफ़. चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961), 401. [10]मिलर, 315.

[11]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिसटिंक्ट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2002), 21. [12]*दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:71 में जे. एच. स्टेक, एलीशा।